वदान्यता

अमी बन्सल द्वारा लिखित व्याख्या

श्रीगुरुमाई ने सभी को जन्मदिन के उपलक्ष्य में एक अति सुन्दर उपहार प्रदान किया है। मुझे बहुत प्रसन्नता हो रही है कि गुरुमाई जी के जन्मदिन, २४ जून २०२१ पर उनकी ओर से सभी के लिए प्रदत्त सद्‌गुण रूपी इस उपहार पर व्याख्या लिखने की सेवा मुझे दी गई है।

वदान्यता

जब भी मेरे सामने कोई नया शब्द आता है, विशेषकर तब, जब वह श्रीगुरुमाई से एक उपहार हो तो सबसे पहले मैं जो करना चाहती हूँ वह है, उस शब्द को ज़ोर-से बोलना। यह ऐसा ही है जैसे गुरुमाई जी से प्रसाद ग्रहण करना और मन्त्र के रूप में उनके प्रसाद का रसास्वादन करना। अतः मैं आपको भी यही करने के लिए आमन्त्रित करती हूँ। इस शब्द को पढ़ें, अपने मन में इसके सही उच्चारण का अभ्यास करें, अक्षरों के सौन्दर्य का आनन्द लें। उदाहरण के लिए, जब हम इस शब्द को रोमन लिपि में लिखते हैं तो इसमें स्वर “a” [स्वर “अ”] कई बार आता है : va-dānya-tā (va-daanya-taa)। यह कुछ ऐसा ही है जैसे “आऽऽऽऽऽह” कहना, जैसे श्वास खुल रहा हो, मुक्त हो रहा हो। अब, इस शब्द का उच्चारण कई बार करें।

जब गुरुमाई जी हमसे कुछ कहती हैं तो हमें अपने हृदय में, अपनी पूरी सत्ता में एक अलौकिक अनुनाद का अनुभव होता है। यह अवर्णनीय होता है। इसी कारण, गुरुमाई जी ने उपहारस्वरूप जो सद्‌गुण हमें प्रदान किया है, उसका जब हम ज़ोर-से उच्चारण करते हैं तो इससे एक विशिष्ट भाव, एक अन्तर-स्थिति जाग्रत होती है, एक परिचित-सी, फिर भी एक ऐसी नई व अनूठी भावना जगती है जिसमें दिव्य प्रेरणा निहित होती है। तो एक बार फिर, इस शब्द का उच्चारण बार-बार करें या अगर आप चाहें तो इसे मन ही मन भी दोहरा सकते हैं :

वदान्यता

जब आप इसे दोहराएँ तो इसे अपने शरीर की हर कोशिका में स्पन्दित होने दें। इसका बस आनन्द लें। इसका रसास्वादन करें। इसके सौन्दर्य को अपनी सम्पूर्ण सत्ता में व्याप्त होने दें।

यह सद्‌गुण 'वदान्यता', गहन अर्थों से समृद्ध है। अन्य किसी भी भाषा का कोई भी शब्द 'वदान्यता' के सटीक अर्थ को व्यक्त नहीं कर सकता, और न ही उन सभी अन्य गुणों को जो इस शब्द में समाविष्ट हैं व जिन्हें यह जगाता है।

इसलिए, मैं यहाँ इसके बहुआयामी अर्थों और बहुरंगी संकेतार्थों पर प्रकाश डालूँगी ताकि आप इसके सार को समझें, इसकी अत्युत्कृष्टता की सराहना करें और अपनी सिद्धयोग साधना में इसे लागू कर सकें।

आइए आरम्भ करें। 'वदान्यता' की उत्पत्ति संस्कृत की दो मूल धातुओं से हो सकती है : 'वद्' अर्थात् 'बोलना' या 'व्यक्त करना' और 'दा' अर्थात् 'देना'। इस उत्पत्ति में अनेक अर्थों की शृंखला समाविष्ट है, जिनमें शामिल हैं, उदारता, नेकी और कल्याणकारिता; मित्रता और सौजन्यता; और साथ ही वाक्पटुता और भद्रता से बोलना।

अब, हम वदान्यता के इन विभिन्न रसों को देखते हैं, साथ ही यह भी देखते हैं कि ये सभी के जीवन पर किस प्रकार लागू होते हैं।

वदान्यता है, उदारता, नेकी और कल्याणकारिता।

किसी व्यक्ति में दिखाई देने वाली वदान्यता की कान्ति सूर्यप्रकाश की उस किरण के समान होती है जो एक घने जंगल के अन्धकार को प्रकाशित कर देती है। जिनका हृदय अच्छाई से भरपूर होता है, वे स्वभावतः इस बात में विश्वास रखते हैं कि एक-दूसरे का ध्यान रखना चाहिए और एक-दूसरे की देखभाल करनी चाहिए। उनका उदारशीलता के उस चक्र में यक़ीन होता है जिसमें एक सत्कर्म से दूसरा सत्कर्म प्रेरित होता है और जिससे तरंगों की भाँति ऐसा प्रभाव उत्पन्न होता है जो अन्य लोगों को प्रोत्साहित करता है कि वे भी विचारशील व समानुभूतिपूर्ण बनें। उनकी उदारता स्वार्थरहित होती है क्योंकि वे सच्चे दिल से सतत ऐसे अवसरों की खोज में रहते हैं जब वे इस संसार को अपना सर्वश्रेष्ठ योगदान अर्पित करें। ऐसे व्यक्ति हृदय के सद्‌गुणों का, गुरुमाई जी द्वारा सिखाए गए सद्‌गुणों का परिपालन करने के प्रति समर्पित होते हैं और उनके इसी समर्पणभाव से उनकी नेकी उदित होती है। और उनकी कल्याणकारिता का आधार यह ज्ञान है कि इस ब्रह्माण्ड में सब कुछ *एकमेव* तत्त्व है; इसलिए वे इस समझ के साथ कार्य करते हैं कि जब कोई व्यक्ति दूसरों की मदद करता है तब वह स्वयं की भी मदद कर रहा होता है। वे जब देते हैं तो उसमें कोई हिचक नहीं होती और उनके परोपकार में कोई छिपा हुआ हेतु नहीं होता। ऐसे लोगों के सद्‌गुणों की बराबरी तो केवल प्रकृति के अपरिमित प्राचुर्य व औदार्य के साथ की जा सकती है।

एक सुप्रसिद्ध संस्कृत सुभाषित वदान्यता के इस सद्गुण को चित्रित करता है :

धत्ते भरं कुसुमपत्रफलावलीनां मर्मव्यथां स्पृशति शीतभवां रुजं च।
यो देहमर्पयति चान्यसुखस्य हेतोस्तस्मै वदान्यगुरवे तरवे नमोऽस्तु॥

मैं उस वदान्यतापूर्ण महान वृक्ष को नमन करता हूँ
जो पत्ते, फल और फूलों से लदी
अपनी शाखाओं का भार धारण किए हुए है।
अपनी शाखाएँ प्रदान कर
वह व्यथा को सहन करता है
व घोर शीत में दृढ़ता से खड़ा रहता है,
और इस प्रकार वह दूसरों के सुख के लिए
अपनी पूरी देह को अर्पित कर देता है।[१]

***

वदान्यता है, मित्रता और सौजन्यता।

जो लोग वदान्यता के मूर्तरूप होते हैं, मित्रता और सौजन्यता उनके स्वभाव में होती है। वे स्नेहशील, सत्कारशील होते हैं और वे किसी की बात को बड़े ध्यान से सुनने के लिए तत्पर रहते हैं। मित्र के रूप में वे प्रेममय होते हैं और उनके सान्निध्य में सहजता व स्वतः-स्फूर्तता महसूस होती है।

अपनी रचना 'नीतिशतकम्' में ऋषि भर्तृहरि कहते हैं :

तन्मित्रमापदि सुखे च समक्रियं यत्

मित्र वह होता है जो विपत्ति के समय और सुख के समय,
दोनों में साथ होता है।[२]

एक अच्छा मित्र वह होता है जिसका स्थिर साथ व सान्निध्य और मार्गदर्शन हमें संकट के समय में ताक़त देता है, और जो खुशी के अवसरों पर हमारी प्रसन्नता को और भी बढ़ा देता है।

संस्कृत शब्द 'मित्र', सूर्यदेव का भी एक नाम है। इस पृथ्वी के लिए प्रकाश व ओज के स्रोत के रूप में सूर्य हर प्रातः सभी जीवों को अनवरत रूप से जगाता है और जीने के लिए, श्वास लेने व फलने-फूलने के लिए उनका आवाहन करता है। इस ब्रह्माण्ड के मित्र के रूप में सूर्य समस्त सृष्टि पर अपनी दृष्टि

बनाए रखता है तथा पृथ्वी व ग्रह-नक्षत्रों को भी पोषण देता है। चाहे पशु हों या पक्षी, मानव हों या पेड़-पौधे, नदियाँ हों, पर्वत हों या सागर—सूर्य सभी का समान रूप से मित्र है।

***

वदान्यता है, वाक्पटुता और भद्रता से बोलना।

शब्द—चाहे वे बोले जाएँ, लिखे जाएँ या विचारों के रूप में उनकी अनुभूति की जाए—वह मुख्य तरीक़ा हैं जो हमारे पास स्वयं को व्यक्त करने के माध्यम के रूप में है। हमारे शब्दों का हमारे जीवन पर, हमारे भाग्य पर और हमारे प्रियजनों पर स्थायी प्रभाव होता है—शब्दों से बात सुलझ सकती है और उलझ भी सकती है, शब्द किसी को प्रोत्साहित भी कर सकते हैं और हतोत्साहित भी। वदान्यता का सद्गुण हमें सिखाता है कि हम सावधानी से और स्पष्टता से अपने आपको व्यक्त करें। जब हमारे परस्पर संवाद में, आदान-प्रदान में स्पष्टता होती है तब हम वदान्यता को अभिव्यक्त कर रहे होते हैं।

वदान्यता शब्दों के माध्यम से भगवान की उदारता व उनके स्नेह को प्रतिबिम्बित करती है। यह हमें भद्रता से बोलने के लिए मार्गदर्शित करती है। भद्रता से बोलने का अर्थ यह नहीं कि हम झूठी, "मीठी-मीठी" बातों में लिप्त रहें। जब हम सम्मान सहित, और फिर भी ईमानदारी से अपनी बात कहते हैं, तब हम भद्रता से बात कर रहे होते हैं। जब हममें सामंजस्य व स्पष्टता होती है तो हम वाक्पटुता से बोल रहे होते हैं। जब हमारे शब्दों के पीछे निहित *उद्देश्य* दूसरों को सम्बल देना होता है, तब हम मधुरता से बोल रहे होते हैं। जब हम सोच-विचार कर अपने शब्दों को चुनकर बोलते हैं, तब वदान्यता सर्वाधिक तेजस्विता से दमक उठती है।

***

वदान्यता है, उदारता, नेकी और कल्याणकारिता।

वदान्यता है, मित्रता और सौजन्यता।

वदान्यता है, वाक्पटुता और भद्रता से बोलना।

मैं आपको वदान्यता के इन रसों को निकटता से देखने के लिए आमन्त्रित करती हूँ। यदि आप अपने आस-पास देखें तो आपको ऐसे अनेक उदाहरण मिलेंगे जिनसे आप देखेंगे कि जड़-चेतन, सभी से यह उदात्त सद्गुण प्रसरित हो रहा है। यह मेरा दृढ़ विश्वास है कि वदान्यता के इस सद्गुण को हमारे समक्ष प्रकट कर और जन्मदिन के उपहारस्वरूप इसे हमें प्रदान कर, गुरुमाई जी इस बात पर बल दे रही हैं

कि—अपनी साधना में किसी भी समय और विशेषकर इस अशान्ति व अनिश्चितता से भरे समय में—हमें सजगता के साथ इस सद्‌गुण की रक्षा करनी चाहिए, इसका अभ्यास करना चाहिए और इसका मूर्तरूप बनना चाहिए, क्योंकि यह हमारे अपने जीवन में और साथ ही दूसरों के लिए भी एक दृढ़ आश्रय के रूप में कार्य करेगा।

वदान्यता का बोध हमें वह दृष्टि प्रदान करेगा जो भारत के ऋषि-मुनियों की दृष्टि थी और जिसका ज्ञान उन्होंने अपने शिष्यों को प्रदान किया। इसी दिव्य प्रेरणादायी दृष्टि को समझाते हुए ऋषि वसिष्ठ कहते हैं :

समदृष्टिरुदारात्मा वदान्यः संविभागवान्
पेशलस्निग्धमधुरः सुन्दरः पुण्यकीर्तनः॥

ज्ञानी महात्माओं की समदृष्टि होती है,
और वे विशालहृदयी, उदार व परोपकारी होते हैं।
वे शान्त, प्रेममय होते हैं,
उनकी वाणी में भद्रता होती है
और उनका रूप सुन्दर होता है।
वे सच्चे अर्थ में अपने पुण्यकर्मों के लिए प्रसिद्ध होते हैं।[३]

कितनी सुन्दर बात है न? क्या यह एक ऐसा अद्‌भुत लक्ष्य नहीं है जिसकी प्राप्ति की हम कल्पना करें, जिसके लिए हम प्रयत्नशील रहें और जिसके अनुरूप अपना जीवन जिएँ?

मेरा यह दृढ़ विचार है कि जब श्रीगुरुमाई हमें कुछ प्रदान करती हैं तो उन्हें पूरा विश्वास होता है कि जो वे हमें प्रदान कर रही हैं, उसकी अनुभूति करने में हम सक्षम हैं। अतः, मैं आपको प्रोत्साहित करती हूँ कि आप यह जानें कि वदान्यता का सद्‌गुण आपमें *अवश्य ही* है। अब तक आपको शायद पता न हो कि अपने अन्दर निहित इन अनूठे गुणों का वर्णन कैसे किया जाए, पर अब आपको यह पता है।

वदान्यता के लिए अभिकथन

मैं वदान्यता के विविध रंगों से सिक्त हूँ।

[अभिकथन—वे कथन जिन्हें जागरूकता के साथ बार-बार दोहराया जाता है ताकि वे हमारी चेतना में पैठ जाएँ।]

---

[१] सुभाषित; अंग्रेज़ी भाषान्तर © एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन २०२१।

[२] भर्तृहरि; नीतिशतकम् ६८; अंग्रेज़ी भाषान्तर © एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन २०२१।

[३] योगवासिष्ठ ७.१७०.३४; अंग्रेज़ी भाषान्तर © एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन २०२१।

©२०२१ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।